ब्रह्मदत्त और वानरराज

प्राचीन समय की बात है, हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं की तलहटी में स्थित किसी सुदूर घाटी में वानरों का एक दल रहता था। उनका निवास स्थान, सपाट चट्टानों के ऊपर तेज गति से बह रही पवित्र गंगा नदी के पास था। वहाँ की वायु, ऑर्किड से सुगन्धित थी। वहाँ के वातावरण में केवल, बहते हुए जल का संगीत, पक्षियों की आनन्दपूर्ण चहचहाहट, वृक्षों की मन्द सरसराती हवा और मस्त बन्दरों की किटकिट ही सुनाई देती थी।

नदी के पास ही एक पुराना विशाल वृक्ष था जिस पर बहुत ही अद्भुत सुनहरे फल लगते थे। यह फल खुशबूदार व रसीला था, छूने में नरम और खाने में स्वादिष्ट था। फलों के पक जाने पर, बन्दर वृक्ष पर खेलते, गूदेदार फलों को मिल-बाँटकर खाते और अपने सुहावने व शान्त जीवन का आनन्द लेते थे।

वानरों का यह सौभाग्य उनके मुखिया के कारण था, उसके जैसा अत्यन्त शक्तिशाली और उदार वानरराज पहले कभी नहीं हुआ था। उसका आकार दूसरे वानरों से दुगुने से भी अधिक था। बहुत ही ताकतवर और बहादुर होते हुए भी वह नम्र और दयालु था। और वह असाधारण रूप से बुद्धिमान भी था। उसी ने इस सुन्दर और भरे-पूरे स्थान की खोज की थी जहाँ उसका दल फल-फूल सकता था। ये वानरराज वास्तव में, भगवान बुद्ध के अवतार, बोधिसत्त्व थे।

एक दिन वानरराज नदी की क्रीड़ा का आनन्द ले रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि उस वृक्ष से एक बौर गिरा और नीचे नदी में बहने लगा। यह बौर कहाँ तक जाएगा? वानरराज ने सोचा कि यह बौर नीचे तराई में रहने वाले अजनबी जातियों- मनुष्यों के पास पहुँचेगा! यदि वे लोग यह फूल या सुनहरा फल देख लेगें तो वे चाहेंगे कि यह वृक्ष उनके पास हो और वानरों के पास अपने लिए कोई सुरक्षित घर नहीं बचेगा।

वानरराज ने अपने दल को इकट्ठा किया और आनेवाले खतरे के बारे में बताया। उसने उन्हें बताया, “हर साल हमें नदी के ऊपर झुकी हुई डालियों पर से सभी फूलों और नए फलों को तोड़ लेना चाहिए। यह एक छोटा सा त्याग होगा। बहुत सारी डालियाँ जमीन के ऊपर भी हैं, उनसे हमें प्रचुर मात्रा में फल मिल जाएँगे।”

सभी बन्दर अपने मुखिया की चेतावनी से सतर्क हो गए। उन्होंने नदी के ऊपर झुकी हुई डालियों पर से फूलों को तोड़ना शुरू कर दिया। छोटे बच्चों ने तो इसे एक खेल बना लिया, वे आपस में मुकाबला करने लगे कि कौन सबसे ज्यादा इकट्ठा करता है। वानरराज अपने स्थान पर बैठकर इस खेल को देखकर मुस्कुराते थे।

समय के साथ उनका दल फलने-फूलने लगा, दूसरे बन्दर भी उनके दल में आने लगे। सभी का स्वागत था। बढ़ते-बढ़ते वानरों की संख्या अस्सी हज़ार से भी अधिक हो गई।

कई वर्षों तक सभी बन्दर इस बात के प्रति जागरुक रहे कि फल नदी में गिर कर बहने न पाएँ। गर्मी के दिनों में वानरराज और दल के कुछ दूसरे वानर, दिन-रात देखते रहते थे कि नदी के ऊपर कोई भी फल पक तो नहीं रहा है। परन्तु एक दिन ऐसा आया जब एक फल एक चीटियों के घोंसले के पीछे छुपा रह गया और उसे किसी ने नहीं देखा। किसी की नज़र में आए बिना वह फल पानी में गिर गया और बहता हुआ पथरीले पहाड़ों से होता हुआ नीचे घाटी में पहुँच गया।

इस बीच कई मील नीचे, काशी की शाही राज़धानी में, राज ब्रह्मदत्त अपने महल में आलस्यपूर्ण विलासता के साथ रहता था। उसकी सभी इच्छाएँ पूर्ण हो चुकी थी, फिर भी उसे अपने भीतर एक सुस्ती भरा खालीपन महसूस होता था। उसे निरन्तर किसी कमी का एहसास होता था, जिसे वह दावतों और मनोरंजन के आयोजनों द्वारा भरने का भरसक प्रयास करता था। इससे उसका शरीर मोटा हो गया और वह बहुत उदास रहने लगा। राजा को दोपहर के समय ही थोड़ा सन्तोष मिलता था जब वह गंगा नदी के शीतल जल में स्नान करता था। प्रतिदिन राजा के दरबारी उसे मगरमच्छों से बचाने के लिए नदी पर राजा के नहाने के स्थान के ऊपर और नीचे की ओर जाल बाँध देते थे।

एक दोपहर जब राजा ब्रह्मदत्त गर्मियों की चिलचिलाती धूप में नदी में आराम से पड़ा हुआ था, उसने देखा कि एक जाल में कोई चीज़ फंसी है। उसने एक हाथ से इशारा करते हुए कहा, “वह वस्तु कुछ विचित्र दिख रही है, उसे तुरन्त मेरे पास लाओ।”

एक मछुआरा जिसने जाल पकड़ रखा था वह उस वस्तु को लाने के लिए नदी के पानी में कठिनाईपूर्वक अन्दर गया। उसने वह वस्तु लाकर राजा के सहायक को दे दी और जिसने वह राजा को दिखाई। वह अरुणिमा जैसा लाल परन्तु हरा था, छूने में मुलायम, फूला हुआ और बहुत ही सुगन्धित था। राजा ने इसके जैसी कोई चीज़ पहले कभी नहीं देखी थी।

उसने पूछा, " यह क्या हो सकता है? मेरे विचार से यह कोई फल है। लकड़हारे को बुलाओ; शायद उसे मालूम हो, क्योंकि उसे वृक्षों की अच्छी जानकारी है।"

जब लकड़हारा आया, तब राजा ब्रह्मदत्त नदी किनारे शाही शिविर की छाया में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। लकड़हारे ने राजा का अभिवादन किया और उस फल की ध्यान से जाँच की। उसने कहा, "महाराज, मेरे विचार से यह फल आम के नाम से जाना जाता है। मैंने इसके बारे में कहानियाँ सुनी हैं। यह हिमालय के उँचे पहाड़ी क्षेत्र में उत्पन्न होता है, जहाँ की वायु शुद्ध और पानी एकदम स्वच्छ होता है। आम को खाया जा सकता है।"

राजा ने सन्देहपूर्वक कहा, "पहले तुम इसे चखो"। फिर उसने लालच वश कहा, "परन्तु केवल एक छोटा सा टुकड़ा ही लेना"।

जब लकड़हारे ने आम को काटकर उसकी फाँक बनाई, उसके सुनहरी गूदे से मीठी सुगन्ध फैल गई। जब ब्रह्मदत्त ने देखा कि एक फाँक खाने पर भी लकड़हारे को कोई हानि नहीं हुई, तब राजा ने उससे वह फल ले लिया और बड़े स्वाद के साथ खाने लगा। अब तक कई दरबारी इस अद्भुत फल का एक टुकड़ा चखने की इच्छा से वहाँ एकत्र हो गए थे।

राजा ने घोषणा की, "यह एक दिव्य फल है, यह तुलना से परे है।"

आने वाले मिनटों, घंटों और दिनों में पल-पल राजा ब्रह्मदत्त की आम खाने की इच्छा बढ़ती जा रही थी। हर रात वह सपने में एक मोहक वृक्ष देखता जिस की डालियों पर अमृत से भरे सुनहरे फल लगे हैं। इस प्रकार कुछ रातें बीत गई, अब उससे रहा न गया। उसने घोषणा की, "जिस वृक्ष पर ये फल लगते हैं उसे मैं अवश्य ही खोजूँगा।" इसके साथ ही, उसने नदी के प्रवाह की विपरीत दिशा में नाव द्वारा खोज यात्रा आरम्भ कर दी।

यात्रा लम्बी और कठिन थी। वे लोग वर्ष के सबसे गर्म दिनों में नदी के बहाव की विपरीत दिशा में नाव चला रहे थे। इक्कीसवें दिन जब सूर्य पश्चिमी छोर पर ढल रहा था, वे आखिरकार उस शानदार वृक्ष के पास पहुँच ही गए। राजा का दल अपने सामने प्रचुर मात्रा में फलों को देखकर दंग रह गया। नदी के किनारे की ओर की वृक्ष की डालियाँ फलों से लदी थी और ज़मीन की ओर नीचे तक झुकी हुई थीं। राजा और उसके दरबारियों ने सूर्यास्त होने तक छककर खाया। इस स्वादिष्ट फल से सन्तुष्ट होने पर वे पास ही तैयार किए गए अपने शिविर में वापस आए और सो गए।

रात के आकाश में पूर्णिमा का चाँदी जैसा ज्योतिर्मय चन्द्र उदित हुआ। अर्धरात्रि में युवा बन्दरों का एक झुण्ड वृक्ष के पास आया और आम खाने लगा। जब वे जा रहे थे तब उनकी किटकिट से ब्रह्मदत्त की नींद खुल गई। वह बोला, " बन्दर ! अवश्य ही उन्होंने मेरे आम खाए होंगे।" उसने अपने मन्त्री को जगाया और कहा, " कल आम के वृक्ष के चारों ओर हमारे श्रेष्ठ धनुर्धरों को तैनात कर दो, किन्तु वे पूरी तरह से छिपकर रहें। जब वे बन्दर फलों के लिए वापस आएँ, तो उन सबको मार दिया जाए। हमें अवश्य ही अपने आमों की सुरक्षा करनी है।"

एक युवा वानर जो दल से अलग था उसने राजा की योजना सुन ली और जितनी तेज़ वह दौड़ सकता था, दौड़ता हुआ वानरराज के पास गया।

उसने डर से काँपते हुए कहा, " हे हमारे प्रिय मुखिया, हमारी रक्षा करो। निश्चित ही कोई फल नदी में गिर गया होगा और इसीलिए ये मनुष्य यहाँ आ गए हैं। उनकी योजना हमें मारकर आमों को अपने लिए ही रखने की है! अब हमें क्या करना चाहिए?" अब तक तो दल के कई सदस्य मुखिया के आसपास एकत्र हो गए थे ओर उन सबने रोना शुरू कर दिया, "अब हम क्या करेंगे?"

मुखिया ने बड़े प्यार से कहा, " मेरे प्रिय जनों, मैं तुम सबकी रक्षा करूँगा। डरो मत, बल्कि मैं जैसा कहता हूँ, वैसा करो।" अपने दल को आश्वासन देने के बाद, वह पराक्रमी मुखिया अपने दल को आम के वृक्ष के पास ले गया। वह वृक्ष की सबसे ऊँची डाल पर चढ़ गया। उसने बहुत तीव्र गति से सौ गज लम्बी छलांग लगाई और नदी के दूसरे किनारे पर एक वृक्ष पर उतर गया। वहाँ नदी के किनारे पानी के छोर पर उसे एक बाँस का बेंत मिला, जो उसकी एक छलांग के बराबर लम्बा था। उसने सोचा कि वो इसका उपयोग अपने दल को इस विशाल नदी से सुरक्षित पार कराने के लिए पुल की तरह करेगा। उसने उस बाँस के बेंत का एक सिरा एक वृक्ष से और दूसरा सिरा अपने पैर से बाँध लिया। फिर उसने अपनी पूरी ताकत से वापस आम के वृक्ष की ओर छलांग लगाई। लेकिन अफ़सोस! जैसे ही उसने आम के वृक्ष की एक शाखा को पकड़ा, उसे एहसास हो गया कि बाँस का बेंत बहुत छोटा था। दूसरे किनारे पर वृक्ष से बँधा होने के कारण यह पूरी लम्बाई के बराबर नहीं हो रहा था। अब वानरराज ने एक हाथ से आम के वृक्ष की डाल को पकड़ा था और उनका एक पैर बाँस के बेंत से बँधा था, वे बीच में लटक रहे थे। वे जैसे पुल का ही एक भाग बन गए थे। साहसपूर्वक वैसे ही डाल को पकड़े हुए उन्होंने अपने विशाल दल को कहा, " इस पुल को पार करो ओर तुम सब बच जाओगे।"

एक के बाद एक सभी बन्दर उनके शरीर पर से गुज़रते हुए बाँस के बेंत के द्वारा नदी के दूसरे किनारे पर सुरक्षित पहुँच गए। परन्तु अन्त में बचे हुए एक बन्दर के मन में दल का मुखिया बनने की इच्छा थी। बोधिसत्त्व का यह ईष्यालू प्रतिद्वंद्वी वानर, मुखिया की पीठ पर जोर से कूदा, इससे उनकी रीढ़ की हड्डी टूट गई। बिना उनकी ओर ध्यान दिए वह दुष्ट बन्दर, मुखिया को कष्ट भोगने के लिए अकेला छोड़कर, अपनी जान बचाने हेतु भाग गया।

प्रातःकाल के उजाले में, राजा ब्रह्मदत्त ने यह पूरी घटना देखी। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। अपने दल को बचाने के लिए किए गए वानरराज के इस त्याग से वे अत्यंत द्रवित हो गए। यह था तो केवल एक पशु, एक बन्दर ही, किन्तु किसी भी मनुष्य से महान था, राजा यह जान गया था।

उसने अपने लोगों को आदेश दिया, " उस वानर को सम्मान सहित यहाँ नीचे ले आओ।"

वानरराज को वृक्ष के नीचे लाकर, रेशमी गद्दी पर लिटाया गया। राजा ने स्वयं, वानरराज को पानी दिया। जब उन्होंने देखा कि अतिथि को उचित आराम मिल रहा है, तब राजा ने उनसे अपना प्रश्न पूछा, " हे महान वानरराज! आप स्वयं को बचा सकते थे। जबकि आपने तो दूसरों को पार कराने के लिए अपने शरीर का ही पुल बना दिया। आपने उनके लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। आपने ऐसा क्यों किया? आप कौन हैं? और ये दूसरे बन्दर आपके क्या लगते हैं?"

वानरराज ने उत्तर दिया, " हे राजन् ! मैं उनका मुखिया और मार्गदर्शक हूँ। मैं उनका पिता भी हूँ और मैं उन्हें प्यार करता हूँ। उनकी स्वतन्त्रता के बदले में मेरे जीवन का मूल्य बहुत कम है। अब न तो मृत्यु और न ही कोई बन्धन मेरे हृदय को विचलित कर सकता है, क्योंकि मैं जिनकी देखरेख करता था वे अब सुरक्षित हैं।"

बोधिसत्त्व ने थोड़ा रूककर राजा से पुनः कहा, " हे राजन् ! यदि मेरी मृत्यु से ही आप कुछ सीख लें तो मैं बहुत प्रसन्न होऊँगा। आपसे मेरा यह कहना है, कि आपके धनुर्धरों की शक्ति नहीं अपितु आपके हृदय की शक्ति आपको राजा बनाती है। एक बुद्धिमान राजा अपनी सम्पूर्ण प्रजा का भला चाहता है। प्रेम से राज्य करने पर ही आप एक सच्चे राजा बनेंगे। हे ब्रह्मदत्त ! मेरे यहाँ न रहने पर भी मेरे वचनों को याद रखना।"

फिर वानरराज ने अपनी आँखे बन्द कर ली और अपनी आखरी साँस ली। राजा ब्रह्मदत्त ने अपना सिर झुकाया। जब वे मौन होकर बैठे थे तब राजा को महसूस हुआ कि वे एक महान आत्मा के

सान्निध्य में थे। एक पवित्र आत्मा के प्रज्ञान ने उनके हृदय कमल को खिला दिया है। अब ब्रह्मदत्त समझ गए कि उनका जीवन अर्थपूर्ण कैसे बनेगा। उन्होंने संकल्प लिया कि एक महान राजा बनने के लिए अब वे समर्पण और प्रेम के साथ अपनी प्रजा की सेवा करेंगे। उन्होंने बोधिसत्त्व के सम्मान में एक मन्दिर बनवाया जिससे वह उनके विवेकपूर्ण निर्देशों को कभी न भूलें। आने वाले वर्षों में काशी राज्य बहुत समृद्ध हुआ और हर बगीचे में आम के पेड़ लगाए गए जिससे हर कोई उनके मीठे फलों का स्वाद चख सके।

****

"ब्रह्मदत्त और वानरराज " एक जातक कथा है। जातक कथाएँ ३०० ईसा पूर्व से ४०० ईस्वी के बीच की लगभग ५५० लघु एवं दन्त कथाओं का एक संग्रह है, जिनमें भगवान बुद्ध के पिछले जन्मों का वर्णन है। ये कथाएँ जो बौद्ध साहित्य का एक अनिवार्य अंग हैं, मानव एवं अन्य जीव के रूप में लिए गए बोधिसत्त्व के अवतारों के सद्गुणों का गुणगान करती हैं।

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन® ।सर्वाधिकार सुरक्षित।